आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:14/06/2022; Published:24/06/2022

हे बादल !

- डॉ. बिरेन्द्र प्रताप सिंह
मुंबई

आये जो बादल बरसे जो बादल
मन मोरा हरषे वो बादल ।

छाई घटायें, मन बहलायें
हौले हौले प्रीत जगाएं।
मन में उमंगें, जगी तरंगें
पिया मिलन को तरसे वो बादल।

धमा चौकड़ी, अफरा तफरी
जैसे खेलें पकड़ा पकड़ी
बिजली चमकी, दी हो धमकी
काहे इतना गरजे वो बादल।

धरती गगन, बंधे आलिंगन
उचट गया मोरा भोला मन
दूर हैं सजना, शीघ्र हो मिलना
यही दुआ रब से वो बादल।

आये जो बादल, बरसे जो बादल
मन मोरा हरषे वो बादल।

****